FULL STOP - 17

➢➢ ब्राह्मण आत्मा **रीस** (**RIVALRY = UNHEALTHY COMPETITION)** क्यों करती है ?

➽ _ ➽ जब दूसरों को हराने की भावना आती है ...

➽ _ ➽ जब सूक्ष्म शत्रुता का भाव होता है ..

➽ _ ➽ जब इर्ष्या / Jealousy की भावना होती है

➽ _ ➽ जब हम यह सहन नहीं कर पाते की कोई और आत्मा किसी क्षेत्र में मुझसे आगे निकल जाए

➢➢ ब्राह्मण आत्मा रीस (RIVALRY) कहाँ कहाँ करती है ?

➽ _ ➽ ज्ञान

→ ज्ञान सुनाने / लिखने में

→ ज्ञान चिंतन में

➽ _ ➽ योग

→ योग में दिखावा करना :- सुबह दूसरों से जल्दी उठकर दूसरों को दिखाना और अपने अहंकार की तृप्ति करना

→ मौन का आडम्बर करना ... पर अन्दर बहुत कुछ चल रहा होता है

➽ _ ➽ धारणा

→ "हम इस संसार के सबसे ज्यादा निरहंकारी लोग हैं" - यह भी अहंकार है

→ अगर कोई आपसे आकर कहे की उसके अन्दर आपसे जयादा निमित भाव है... और आपको अगर इससे ठेस पहुँचती है तो समझ लीजिये की आपका निमित भाव झूठा है

→ "योगी ने काम , क्रोध , लोभ , मोह को जीत लिया है" - इस बात का भी अहंकार हो जाता है

➽ _ ➽ सेवा

→ हमारा स्थान तुमसे ज्यादा बड़ा और अच्छा है

→ उनसे बड़ा मेला / CONFERENCE हम करेंगे

→ हमारे सेण्टर ज्यादा हैं

→ हमारे VIP STUDENTS ज्यादा हैं

→ हमारी क्लास ज्यादा बड़ी है

→ हमारी व्यवस्था ज्यादा अच्छी है

➢➢ हम रीस न करें , इसके लिए क्या करें ?

➽ _ ➽ सदा स्मृति में रखें :-

→ हर आत्मा का अपना अपना भाग्य है

→ हर आत्मा की अपनी अपनी प्रालब्ध है

→ हर आत्मा की अपनी विशेषता है

→ हर आत्मा की बोधिक क्षमता अपनी अपनी है

→ हर आत्मा की अपनी अपनी कमजोरी है

→ हर आत्मा के अपने अपने हिसाब किताब हैं

→ हर आत्मा की अपनी अपनी चुनोतियाँ हैं

→ हर आत्मा UNIQUE है

➳ _ ➳ प्रकृति से सीखें :-

→ घास कभी वृक्ष को देखकर उसके जैसा बनने की कोशिश नहीं करती

→ वृक्ष कभी घास को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करता

➳ _ ➳ वस्तुओं से सीखें :-

→ जो काम तलवार से हो सकता है, वह काम सुई से नहीं हो सकता

→ जो काम सुई से हो सकता है, वह काम तलवार से नहीं हो सकता

➳ _ ➳ दूसरी आत्माओं से प्रेरणा लें / सीखें / गुनग्राही बनें

→ पर उनसे इर्ष्या कर खुद को जलाए नहीं / खुद को दिन रात बेचैन न करें

➳ _ ➳ भावनाओं को दूषित होने से रोकें

→ योग अभ्यास तो हम ग्लोब को साकाश देने के लिए करते हैं पर साथ में रहने वाले के प्रति अपनी भावनाओ को दूषित होने से नहीं रोक पाते हैं

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 18 - 19 Of Full Stop Book

---